दिनांक **10 अक्टूबर 2022** को दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के क्रम में दयानन्द सुभाष नेशनल (पी०जी०) कॉलेज, उन्नाव में हिंदी विभाग, पं० विश्वंभर दयालु त्रिपाठी जिला पुस्तकालय, उन्नाव तथा जन एकता मुहिम के संयुक्त तत्वाधान में डॉ ० रामविलास शर्मा जी की जयंती के उपलक्ष्य ***मे डॉ० रामविलास शर्मा: आज़ाद भारत के स्वप्न द्रष्टा विचारक एवं समालोचक*** **विषय** पर **राष्ट्रीय संगोष्ठी** का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ ० राम करन मृदुल (रायबरेली)जी द्वारा वैदिक मंत्रों एवं सरस्वती वंदना से किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंद शुक्ल ने अतिथियों का स्वागत किया। अपने स्वागत वक्तव्य के क्रम में संगोष्ठी के विषय पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि डॉ० रामविलास शर्मा जी के लेखन ने 1857 से लेकर 1947 तक के स्वतंत्रता आंदोलन के पूरे दौर में साहित्यकारों के योगदान को स्पष्ट करने का कार्य किया , उन्होंने 100 से अधिक पुस्तकें लिखी तथा स्वाधीनता , न्याय व धर्मनिरपेक्षता के मूल्यों को विकसित करने का प्रयास किया , जिस नैतिकता, समानता तथा धर्मनिरपेक्षता के साथ डॉ० रामविलास जी ने उस दौर के समाज का मूल्यांकन किया है वह आज संभव नहीं है। इस क्रम में उन्होंने आगे कहा कि डॉ ० रामविलास शर्मा, भारतेंदु हरिश्चंद्र, निराला जी इत्यादि साहित्यकारों ने आज़ादी के उपरांत भारत की जो परिकल्पना की थी उसे हम कितना आगे ले जा पाते हैं यह चिंतनीय है ।

कार्यक्रम के विशिष्ट वक्ता प्रोफ़ेसर गोपाल प्रधान (प्राध्यापक हिन्दी विभाग ,अम्बेडकर वि .वि. दिल्ली) जी ने डॉ ० रामविलास जी की पुस्तक स्वाधीनता एवं समाजवाद ' का उल्लेख करते हुए किसानों की समस्याओं पर विशेष रूप से चर्चा करते हुए कहा कि समाजवाद की धारा पैदा ही इसलिए हुई ताकि स्वतंत्रता आंदोलन में किसानों के आंदोलन / सवालों को प्राथमिकता दी जाए। इस क्रम में उन्होंने कहा कि जब तक भारत आर्थिक एवं सांस्कृतिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं होगा तब तक भारतीय साहित्य का विकास संभव नहीं है ।

मुख्य वक्ता व संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे प्रो . अवधेश प्रधान (पूर्व विभागाध्यक्ष काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी) ने प्राचीन भारत की सामाजिक , सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक समृद्धता की विस्तृत चर्चा करते हुए कहा कि भारत में कभी भी रंगभेद व वर्ण व्यवस्था नहीं रही यद्यपि साम्राज्यवाद जहां भी गया वहां भाषा को नष्ट करने का कार्य किया गया पर भारत में इतने वर्षो की गुलामी के बाद भी आज लगभग 800 भाषाएं हैं जो भारत के भाषा विज्ञान की एकता को दर्शाती हैं।

कार्यक्रम का कुशल संचालन डॉ० राकेश कुमार चौरसिया, सहायक प्राध्यापक हिंदी विभाग तथा आभार ज्ञापन डॉ० सुषमा पुरवार ,अध्यक्ष हिंदी विभाग ने किया ।इस अवसर पर डॉ ० रामनरेश, श्री दिनेश प्रियमन, श्री जयमूर्ति शर्मा , श्री आनंदीदीन त्रिवेदी ,श्री सतीश त्रिपाठी , श्री अमित कुमार शर्मा तथा उन्नाव जनपद के प्रबुद्ध जन , महाविद्यालय के समस्त शिक्षक गण, शिक्षणेत्तर कर्मचारी एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

दयानन्द सुभाष नेशनल (पी.
उन्नाव, उ.प्र. - २०९८०१
डॉ. रामविलास शर्मा की जयन्ती के
दिनाँक : १० अक्टूबर २०२२,
अध्यक्षता : प्रो. विमल
मुख्य वक्ता : प्रो. अवधेश

दयानन्द सुभाष नेशनल (पी.जी.) कॉलेज
उन्नाव, उ.प्र. - २०९८०१

जो 'इंसान' आपकी जीत के लिए खुद 'हार' मान लें, उस इंसान से आप 'जीवन' में कभी नहीं 'जीत' सकते।

लिए खुद 'हार' मान ले,
उस इन्सान से आप 'जीवन'
में कभी नहीं 'जीत' सकते।

लिए खुद 'हार' मान ले,
उस इन्सान से आप 'जीवन'
में कभी नहीं 'जीत'

जो 'इन्सान' आपकी जीत के
लिए खुद 'हार' मान ले,
उस इन्सान से आप 'जीवन'
में कभी नहीं 'जीत' सकते।

दयानन्द सुभाष नेशनल (पी.जी.) कॉलेज